ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

पातिशाही १० ।।

त्व प्रसादि सवय्ये

स्रावग सुध्ध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ।।
सूर सुरारदन सुध्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ।।
सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के ।।
स्री भगवान की भाइ क्रिपा हू ते एक रती बिनु एक रती के ।।१।।
माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ।।
कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ।।
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ।।
एते भए तु कहा भए भूपति अंत कौ नांगे ही पांइ पधारे ।।२।।
जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे ।।
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत हैं हयराज हजारे ।।
भूत भविख्ख भवान के भूपत कउन गनै नहीं जात बिचारे ।।
स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे ।।३।।
तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै ।।
बेद पुरान कतेब कुरान ज़मीन ज़मान सबान के पेखै ।।
पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजार क देखै ।।
स्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ।।४।।
सुध्ध सिपाह दुरंत दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ।।
भारी गुमान भरे मन मैं कर परबत पंख हले न हलैंगे ।।
तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगन मान मलैंगे ।।
स्री पति स्री भगवान क्रिपा बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे ।।५।।
बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछय्या ।।
तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलय्या ।।
गाड़्हे गड़्हान को तोड़नहार सु बातन हीं चक चार लवय्या ।।
साहिबु स्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिवय्या ।।६।।
दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख्ख भवान जपैंगे ।।
जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ।।
पुंन प्रतापन बाढ जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ।।

साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ।।७।।
मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ।।
कोट इसनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे ।।
ब्रहम महेसर बिसन सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे ।।
जे नर स्त्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ।।८।।
कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ।।
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइओ ।।
बास कीओ बिखिआन सो बैठ कै ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ।।
साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ।।९।।
काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ।।
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीसु निवाइओ ।।
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ।।
कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग स्त्री भगवान को भेदु न पाइओ ।।१०।।